पाठ 06 -एकांकी: रीढ़ की हड्डी (जगदीशचंद्र माथुर)

खंड 1: बैठक की तैयारी और पारिवारिक अंतर्द्वंद्व

कठिन शब्दार्थ

- **अधेड़:** ढलती उम्र का, आधी उम्र का।
- **तख्त:** लकड़ी की बड़ी और भारी चैकी।
- **गंदुमी:** गेहुँए रंग का।
- **जंजाल:** झंझट, झमेला या बखेड़ा।
- **ठठोली:** हँसी-मज़ाक या परिहास।
- **टीम-टाम:** बाहरी दिखावा, साज़-सज्जा या श्रृंगार।

सरल व्याख्या

एकांकी की शुरुआत बाबू रामस्वरूप के घर के एक मध्यमवर्गीय सजे हुए कमरे से होती है। रामस्वरूप और उनका घरेलू सहायक रतन एक भारी लकड़ी का तख्त लाकर कमरे में बिछाते हैं। रामस्वरूप रतन को डाँटते-फटकारते हुए उससे दरी, चद्दर, हारमोनियम और सितार मँगवाकर कमरे को व्यवस्थित करते हैं। तभी रामस्वरूप की पत्नी प्रेमा वहाँ आती है और बताती है कि उनकी बेटी उमा मुँह फुलाकर लेटी हुई है।

बातचीत से पता चलता है कि उमा को देखने के लिए लड़के वाले (बाबू गोपालप्रसाद और उनका बेटा शंकर) आने वाले हैं। रामस्वरूप ने गोपालप्रसाद की इच्छा के अनुसार उमा की उच्च शिक्षा (बी।ए। पास होना) को छिपाकर केवल मैट्रिक तक पढ़ा होना बताया है, क्योंकि लड़के वाले अधिक पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहते। प्रेमा शिकायत करती है कि उमा ने पाउडर या कोई भी श्रृंगार (टीम-टाम) करने से साफ़ मना कर दिया है और वह आधुनिक पढ़ाई-लिखाई को जंजाल मानती है। रामस्वरूप अपनी पत्नी को समझाते हैं कि वे उमा को जैसे-तैसे तैयार करके नीचे लाएँ और बातचीत को तय करने में सहयोग दें। इसी बीच नौकर रतन को मक्खन लाने के लिए बाज़ार भेजा जाता है।

खंड 2: गोपालप्रसाद और शंकर का आगमन तथा दकियानूसी बातचीत

कठिन शब्दार्थ

- **करीने से:** ढंग से, सलीके से या व्यवस्थित क्रम में।
- **दकियानूसी:** पुराने, रूढ़िवादी या संकीर्ण विचारों वाला।
- **फितरती:** चालबाज़, चालाक या चतुर स्वभाव का।
- **खीस निपोरना:** दाँत दिखाकर बेढंगे तरीके से हँसना।
- **तकल्लुफ़:** बनावट, औपचारिकता या शिष्टाचार।
- **जायचा:** जन्मपत्री या कुंडली।

सरल व्याख्या

बाबू गोपालप्रसाद और उनका बेटा शंकर रामस्वरूप के घर पहुँचते हैं। गोपालप्रसाद अनुभवी और चतुर व्यक्ति हैं, जबकि शंकर की कमर थोड़ी झुकी हुई है और वह खिसियाहट भरी हँसी हँसता है। रामस्वरूप उनका स्वागत करते हैं

और चाय-नाश्ता परोसते हैं। बातचीत के दौरान गोपालप्रसाद विवाह को एक 'बिजनेस' (व्यापार) की तरह संबोधित करते हैं, जिससे उनके लालची और संकीर्ण दृष्टिकोण का पता चलता है।

गोपालप्रसाद अपने ज़माने की खान-पान की ताक़त और पढ़ाई की सिटिंग का बढ़ा-चढ़ाकर बखान करते हैं। वे स्त्री-शिक्षा का पुरज़ोर विरोध करते हुए कुतर्क देते हैं कि ऊँची तालीम पाना केवल मर्दों का काम है; यदि औरतें भी अंग्रेज़ी अखबार पढ़ने लगीं और पॉलिटिक्स पर बहस करने लगीं, तो गृहस्थी चौपट हो जाएगी। वे उदाहरण देते हैं कि मोर के पंख होते हैं मोरनी के नहीं, और शेर के बाल होते हैं शेरनी के नहीं। रामस्वरूप भी उनकी हाँ में हाँ मिलाते हैं क्योंकि वे अपनी बेटी का विवाह उनके यहाँ तय करना चाहते हैं। गोपालप्रसाद साफ़ कहते हैं कि उन्हें मेमसाहब नहीं भुगतनी, लड़की केवल मैट्रिक पास ही होनी चाहिए।

खंड 3: उमा का प्रवेश और ऐतिहासिक विद्रोह

कठिन शब्दार्थ

- **निहायत:** अत्यधिक, अत्यंत या बहुत ज़्यादा।
- **सकपकाकर:** अचानक डर जाना, घबरा जाना या भौचक्का होना।
- **तल्लीनता:** पूरी तरह लीन या मग्न हो जाना।
- **अधीर:** धैर्यहीन, उतावला या आकुल।
- **साहबजादे:** उच्च कुल का बेटा, यहाँ व्यंग्य के रूप में प्रयुक्त।
- **तब्दील:** बदल जाना या परिवर्तित होना।

सरल व्याख्या

उमा सादे कपड़ों में, सिर झुकाए, हाथ में पान की तश्तरी लिए कमरे में प्रवेश करती है। जब उसका चेहरा ऊपर उठता है, तो उसकी नाक पर सोने के रिम वाला चश्मा दिखाई देता है, जिसे देखकर गोपालप्रसाद और शंकर चौंक उठते हैं। रामस्वरूप बात को सँभालते हुए कहते हैं कि पिछले महीने आँखें दुखने के कारण इसे चश्मा लगाना पड़ा था। गोपालप्रसाद उमा से उसकी पेंटिंग, सिलाई और संगीत के बारे में पूछते हैं। उमा तल्लीनता से मीरा का भजन "मेरे तो गिरधर गोपाल" गाती है, परंतु गाते-गाते उसकी नज़र शंकर की झेंपती हुई आँखों से मिलती है और वह अचानक रुक जाती है।

जब गोपालप्रसाद रूखे स्वर में उमा से इनाम जीतने और उसका मुँह खोलने के लिए कहते हैं, तो उमा का स्वाभिमान जाग उठता है। वह अपनी कड़क और स्पष्ट आवाज़ में कहती है कि जब मेज़-कुर्सी बिकती है, तो दुकानदार मेज़-कुर्सी से कुछ नहीं पूछता, केवल खरीदार को दिखा देता है। वह गोपालप्रसाद को 'अक्ल का ठेकेदार' और 'खरीदार' कहते हुए फटकारती है कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता, क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं? उमा शंकर की पोल खोलते हुए कहती है कि यह साहबजादा पिछली फरवरी में लड़कियों के हॉस्टल के इर्द-गिर्द चक्कर काटते हुए पकड़ा गया था और वहाँ से बेइज़्ज़त होकर मुँह छिपाकर भागा था। गोपालप्रसाद को जब पता चलता है कि उमा बी।ए। पास है, तो वे धोखे का आरोप लगाकर अपनी छड़ी उठाकर जाने लगते हैं। जाते-जाते उमा उन पर अंतिम तीखा व्यंग्य करती है कि घर जाकर यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के "रीढ़ की हड्डी" (बैकबोन) है भी या नहीं! मेहमानों के जाने के बाद उमा सिसक-सिसक कर रोने लगती है और नौकर रतन मक्खन लेकर आता है, जिसके साथ पर्दा गिरता है।